‘शोध-सार’

प्रस्तुत शोध शांति प्रयोगशाला जो कि पश्चिमी विचारधारा पर आधारित एक कार्यक्रम है, के अध्ययन, कार्यक्रम एवं उनके कृयान्वयन पर आधारित है। शांति प्रयोगशाला सकारात्मक शांति के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य करती है, इसकी शुरुवात कोलम्बिया से हुई एवं वर्तमान में वैश्विक स्तर पर विभिन्न जगहों पर शांति प्रयोगशालाएँ सामाजिक शांति के निर्माण हेतु प्रयास कर रही हैं। भारतीय संदर्भ में महात्मा गांधी के सेवाग्राम-आश्रम तथा वहाँ पर गांधी जी समेत सभी आश्रम वासियों की दैनिकचर्या और आश्रम में संचालित रचनात्मक कार्यक्रमों के आधार पर गांधी जी के प्रयोगों को शांति प्रयोग एवं सेवाग्राम आश्रम को एक प्रयोगशाला के तौर पर प्राकल्पनात्मक रूप में देखने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु **‘गुणात्मक’** विधि का प्रयोग करते हुये, **शोध प्रकल्पनाओं** का निर्माण किया गया है। साहित्य-पुनरावलोकन से प्राप्त आख्यानों के आधार पर शोध की संरचना को **विवेचनात्मक दृष्टि** से **निगनात्मक शोध** के रूप में निर्मित किया गया है। तथा शोध में उपकरण के रूप में **विश्लेषणात्मक पद्धति** के आलोक में **विवरणात्मक**, **विवेचनात्मक** उपगमों का प्रयोग किया गया जिसमें शांति-प्रयोगशाला निर्माण, संरचना एवं विचार पक्ष को निर्देशित किया गया है।

विश्लेषण कि दृष्टि से इस लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसके अंतर्गत प्रथम अध्याय ‘शांति-प्रयोगशाला : अवधारणा एवं विकास’ में इसके अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, कार्यप्रणाली एवं विकास को बताया गया है। तथा शांति प्रयोगशाला पर विभिन्न विचारकों के मतों को भी दर्शाया गया है। द्वितीय अध्याय ‘गांधी जी और आश्रम की अवधारणा’ में महात्मा गांधी के दर्शन एवं विचारों के आधार पर उनके आश्रमों की अवधारणा को स्पष्ट किया है। आश्रम स्थापना के पीछे गांधी जी के जो आध्यात्मिक एवं सामाजिक कारण थे उनकी व्याख्या की गई है। तथा गांधी जी के जीवन में आश्रम का महत्व बताते हुए सामाजिक स्तर पर इसके द्वारा पड़ रहे प्रभाव के फलस्वरूप सामाजिक प्रगति का जो मार्ग खुला उसकी चर्चा भी की गई है। इसके जरिये व्यक्तिगत सुधार एवं राष्ट्रीय हित की कामना को पूर्ण करने की जो भावना प्रदर्शित होती है उसकी भी व्याख्या की गई है।

गांधी जी के चारों आश्रम (***फीनिक्स,टॉल्सटॉय, साबरमती एवं सेवाग्राम आश्रम***) की कार्य-प्रणाली एवं उद्देश्य को बताया गया है। तृतीय अध्याय 'सेवाग्राम-आश्रम : स्थापना,उद्देश्य तथा दैनिक-चर्या' में गांधी जी के वर्धा आने के पूर्व की पृष्ट-भूमि को स्पष्ट करते हुए, सेवाग्राम-आश्रम की स्थापना, निर्माण एवं उद्देश्य को बताया गया है। इसकी स्थापना के पीछे गांधी जी के विचार और मन्तव्य की व्याख्या की गई गई है। तथा आश्रम की कार्य-प्रणाली और दैनिक-चर्या को प्रस्तुत किया गया है। किस प्रकार से सभी आश्रम-वासी यहाँ रहा करते थे और गांधी जी के साथ राष्ट्रहित के कार्यों में अपने आप को संलग्न किये हुए थे, इसका विवरण भी दिया गया है। आश्रम की दैनिक-चर्या से होने वाले लाभ एवं आश्रम और समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को भी दर्शाया गया है। चतुर्थ अध्याय 'रचनात्मक-कार्यक्रम : आवश्यकता, प्रयोग एवं मूल्यांकन' में गांधी जी के रचनात्मक-कार्यक्रमों पर आधारित है। सामजी तौर पर इनकी आवश्यकता को बताते हुए प्रकृति को समझाया गया है। 18 रचनात्मक कार्यक्रमों के संदर्भ में क्रमबद्ध विवरण दिया गया है। गांधी जी द्वारा रचनात्मक-कार्यक्रमों के प्रयोग के क्षेत्र एवं परिस्थितियों को प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक बदलाव के पक्षों के रूप में रचनात्मक कार्यक्रमों की व्याख्या की गई है।उसके पश्चात इंका मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है जिसमे प्रत्येक कार्यक्रम का विश्लेषणात्मक सरूप की व्याख्या की गई है। पंचम अध्याय 'सेवाग्राम-आश्रम का एक प्रयोगशाला के तौर पर मूल्यांकन' यह विश्लेषण है अतः इसमें शांति-प्रयोगशाला की कार्य-प्रणाली का एक मापदंड निर्धारित कर सेवाग्राम आश्रम एवं उसकी गतिविधियों और रचनात्मक-कार्यक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। सेवाग्राम आश्रम को शांति की प्रयोगशाला एवं गांधी जी जो एक प्रयोगकर्ता के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया गया है। सेवाग्राम-आश्रम का मूल्यांकन शांति प्रयोगशाला के रूप में किया गया है।

अंततः विश्लेषण के पश्चात सेवाग्राम आश्रम को शांति प्रयोगशाला के रूप में पुनर्स्थापित करने एवं गांधी जी के रचनात्मक प्रयोगों को सामाजिक स्तर पर लागू करने के लिए उसमें जो मूल-भूत बदलाव करना पड़ेगा उसको संदर्भित करते हुए गांधी को एक प्रयोगकर्ता एवं सेवाग्राम आश्रम को प्रयोगशाला के तौर पर बताया गया है। गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम निश्चित तौर पर शांति प्रयोग हैं तथा जिस प्रकार शांति प्रयोगशाला समाज में सामंजस्य एवं सकारात्मक शांति को स्थापित करने हेतु अपने

कार्यक्रमों को लागू करती है गांधी जी भी आपने आश्रम में वैकल्पिक रूप से किए जा रहे प्रयोगों को समाज में स्थापित करना चाहते थे। वर्तमान समय में भी कुछ आंशिक परिवर्तन के साथ गांधी जी के शांति प्रयोगों को सामाजिक स्तर पर लागू किया जा सकता है। इनको वर्तमान समय में लागू करने हेतु परिवर्तन तो आवश्यक है लेकिन इसके उद्देश्य में तनिक भी परिवर्तन नहीं होना चाहिए।गांधी जी मेरे सपनों का भारत पुस्तक में जिस भारतीय व्यवस्था कि कामना करते हैं, उनके यह प्रयोग भारत को उसी दिशा में ले जाएंगे।